



SUPER TET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

भाग - 2 (अ)

संस्कृत



विषय सूची

1. वर्ण विचार	1
2. संधि	11
3. शब्द	30
4. धातु रूप व लकार	37
5. उपसर्ग	41
6. क्रव्यय	45
7. प्रत्यय	51
8. समास	78
9. कारक व विभक्ति	93
10. वाच्य	99
11. वचन	105
12. विलोम शब्द	116
13. वाक्य निर्माण	123
14. वाक्य परिवर्तन	127
15. पर्यायवाची शब्द	129
16. क्रिया	133
17. संस्कृत भाषा में प्रश्न निर्माण	136
18. छंद	139
19. ऋपठित पद्यांश	150
20. ऋपठित गद्यांश	153
21. संस्कृत शिक्षण विधियाँ	156
22. संस्कृत भाषा कौशल विकास	196
23. मूल्यांकन	206

वर्ण विचार

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। पाणिनिने वर्णमाला को 14 सूत्र में प्रस्तुत किया है। परंपरा के अनुसार महेश्वर ने अपने नृत्य की समाप्ति पर जो 14 बार उमरू बजाया, उसीसे ये 14 (ध्वनियाँ) सूत्र पाणिनि को प्राप्त हुए-

‘नृतावशाने नटशजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।

उद्धृतकामः शनकादिशिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥

ये सूत्र इस प्रकार हैं -

1. ऋइउण्(ऋ, इ, उ)
2. ऋलृक (ऋ, लृ)
3. एओइ(ए, ओ)
4. ऐऔच् (ऐ, औ)
5. ह्यवरट् (ह, य, व, र)
6. लण् (ल)
7. जमडणनम् (ज, म, ड, ण, न)
8. झभञ् (झ, भ)
9. घढ्यष् (घ, ढ, ध)
10. जबगडदश् (ज, ब, ग, ड, द)
11. खफछठथयटत् (ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त)

दशरूपक के अनुसार-नृता और नृत्य में भेद होता है। नृता भाव पर आश्रित होता है, जबकि नृत्य ताल एवं लय पर आश्रित होता है।

12. कपय् (क, प, य)
13. शषशर (श, ष, र)
14. हल् (ह)

प्रत्येक सूत्र के अंत में हल् वर्ण का प्रयोग प्रत्याहार बनाने के उद्देश्य से किया गया है (जैसे- ऋइउण् में ण्, हल् वर्ण है) इन्हें प्रत्याहारों के अंतर्गत आने वाले वर्णों के साथ सम्मिलित नहीं किया जाता।

प्रत्याहार

महेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे- ऋच्, इक्, यण्, ऋल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के

मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अंतर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है। किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं

यथा- ऋच् = ऋ, इ, उ, ऋ, ल, ए, ओ, ऐ, औ-यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण ‘ऋ’ का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण ‘च्’ को छोड़ दिया गया है

(क) हल् (पांच सूत्र के प्रथम वर्ण ‘ह’ से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण ‘ल्’ के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह, य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, क, श, ष तथा लृ

(ख) इक् (प्रथम सूत्र के द्वितीय वर्ण ‘इ’ से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण क् के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा लृ

(ग) ऋक् (प्रथम सूत्र के प्रथम वर्ण ‘ऋ’ से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण क् के मध्य आने वाले सभी वर्ण) ऋ, इ, उ, ऋ तथा लृ

(घ) इल् (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण ‘इ’ से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण ‘ल्’ के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, र, तथा ह्

(ड) यण् (पञ्चम सूत्र के द्वितीय वर्ण ‘य’ से लेकर षष्ठ सूत्र के अन्तिम वर्ण ‘ण्’ के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य, व, र तथा लृ

समिधा आदि के नियमों को समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर (ऋच्)- जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं - ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत

ह्रस्व स्वर- जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में पाँच हैं -- अ, इ, उ, ऋ तथा ए। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

दीर्घ स्वर- जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगे उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या आठ है आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ। इनमें से 'लृ' ध्वनि का दीर्घ रूप लृ केवल वेदा में प्राप्त होता है। ऋणित चार वर्णों को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं। क्योंकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरों के मेल से बने हैं।

उदाहरण -

अ+इ=ए अ+ए=ऐ

अ+उ=ओ अ+ओ=औ

प्लुत स्वर-- जिस स्वर के उच्चारण में तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे प्लुत कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हैं तब सम्बोधन पद के ऋणित वर्णों को तीन मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं, उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं। लिपि में प्लुत स्वर को 'ऌ' की संख्या से दिखाया जाता है, उदाहरण के लिए एहि कृष्णेऌ अत्र गौश्चरति। 'ओऌम्' के ओकार का उच्चारण सर्वत्र प्लुत ही होता है।

सभी ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत स्वर वर्ण ऋणनाशिक एवं निःशुनाशिक भेद से द्विविध हैं।

ऋणनाशिक-- जिस स्वर के उच्चारण में मुख के साथ नासिका की भी सहायता ली जाती है, उसे ऋणनाशिक स्वर कहते हैं।

यथा- अँ, एँ इत्यादि समस्त स्वर वर्ण।

निःशुनाशिक-- जो स्वर केवल मुख से उच्चारित होता है। वह निःशुनाशिक है।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे हल् चिह्न (्) लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिका में दर्शाए गए हैं-

उदाहरण-

कु = क, ख, ग, घ, ङ क वर्ग

चु = च, छ, ज, झ, ञ च वर्ग

टु = ट, ठ, ड, ढ, ण ट वर्ग

तु = त, थ, द, ध, न् त वर्ग

पु = प, फ, ब, भ, म् प वर्ग

व्याकरण सम्प्रदाय में इन पाँच वर्गों को कु, चु, टु, तु, पु नाम से जाना जाता है।

य, र, ल, व (ऋतःस्थ)

श, ष, स, ह (ऋष)

1. स्पर्श-- उपर्युक्त "क्" से 'म्' तक के 25 वर्णों को स्पर्श कहते हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है। प्रत्येक वर्ग के ऋणित वर्ण- ड, ज, ण, न् और म् को ऋणनाशिक भी कहा जाता है, क्योंकि इनका उच्चारण मुख के साथ नासिका से भी होता है।

2. ऋतःस्थ- य, र, ल और व वर्णों को ऋतःस्थ कहते हैं। इन्हीं ऋणित स्वर भी कहते हैं।

3. ऋष- श, ष, स, ह, वर्णों को ऋष कहते हैं।

ऋणस्वार

इसका उच्चारण नासिका मात्र से होता है। यह सर्वथा स्वर के बाद ही आता है।

यथा- अहम् - अहां सामान्यतया 'म्' व्यञ्जन वर्ण से पहले ऋणस्वार (ँ) में परिवर्तित होता है।

1. विसर्ग (:)-- इसका उच्चारण किञ्चित् 'ह' के सदृश किया जाता है। इसका भी प्रयोग स्वर के बाद ही होता है।

यथा- रामः, देवः, गुरुः

2. संयुक्त व्यञ्जन- दो व्यञ्जनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

उदाहरण-

1. क्+ष्=क्श्

2. त+र=त्र
3. ज्+ज्=ज्ञ

उच्चारण स्थान

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, श्रोष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के

लिए फेफड से निकली निःश्वास वायु इन स्थानों का स्पर्श करती है। कुछ वर्णों का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को श्रमिणम तालिका से समझा जा सकता है-

स्थान	स्वर	व्यञ्जन			अयोगवाह	संज्ञा
		स्पर्श	अन्तःस्थ	ऊष्म		
कण्ठ	अ, आ	क, ख, ग, घ, ङ	य्	ह्	:	कण्ठ्य
तालु	इ, ई	च, छ, ज, झ, ञ	र्	श्		तालव्य
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट, ठ, ड, ढ, ण	ल्	ष्		मूर्धन्य
दन्त	लृ	त, थ, द, ध, न्		स्	*	दन्त्य
ओष्ठ	उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म्			×प, ×फ	ओष्ठ्य
नासिका	अनुनासिक स्वर	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्			उपध्मानीय •, °	नासिक्य
कण्ठतालु	ए, ऐ		व्			कण्ठतालव्य
कण्ठोष्ठ	ओ, औ				#	कण्ठोष्ठ्य
दन्तोष्ठ						दन्तोष्ठ्य
जिह्वामूल					×क, ×ख	जिह्वामूलीय

समबद्ध स्थानों के साथ नासिका से भी पञ्चम वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयत्न

फेफड से निकली निःश्वास वायु को मुख. नासिका तथा कण्ठ आदि स्थानों से स्पर्श करते हुए मनुष्य द्वारा श्रभीष्ट वर्णों के उच्चारणार्थ किए गए यत्न को प्रयत्न कहते हैं प्रयत्न के दो भेद होते हैं - श्राभ्यन्तर तथा बाह्य वर्णों के उच्चारण काल में मुख के श्रन्दर मनुष्य की चेष्टापत्रक क्रिया को श्राभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके पांच भेद हैं -

स्पृष्ट- वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा के विभिन्न भागों द्वारा मुख के श्रन्दर के विभिन्न स्थानों को स्पर्श किया जाता है तो जिह्वा के इस प्रयत्न को स्पृष्ट प्रयत्न कहते हैं। 'क्' से 'म्' तक सभी व्यञ्जन 'स्पृष्ट' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

विशर्ग का भेद उपध्मानीय (जब विशर्ग के बाद प, फ वर्ण रहते हैं, तब श्रर्ध विशर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण - पुनः पुनः, तपः फलम्)

विशर्ग का भेद जिह्वामूलीय (जब विशर्ग के बाद क, ख वर्ण रहते हैं, तब श्रर्धविशर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण प्रातः कालः, दुःखम्)

ईषत् स्पृष्ट- वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा द्वारा उच्चारण स्थानों को थोड़ा ही स्पर्श किया जाता है, तो जिह्वा के इस प्रयत्न को ईषत् स्पृष्ट कहते हैं य, र, ल् तथा व् ईषत् स्पृष्ट से उच्चारित होते हैं।

विवृत-- वर्ण विशेष के उच्चारण काल में जब मुख-विवर खुला रहता है, तो मुख के इस यत्न को विवृत कहते हैं। सभी स्वर 'विवृत' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

ईषत् विवृत- वर्णों के उच्चारण काल में जब मुख-विवर थोड़ा खुला रहता है, तो मुख के इस यत्न को ईषत् विवृत कहते हैं। श, ष, र्, ह् ईषत् विवृत प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।

संवृत- वर्णों के उच्चारण काल में फेफडे से निकलने वाले निःश्वास का मार्ग जब बन्द रहता है, तब इसे संवृत कहते हैं। इसका प्रयोग केवल ह्रस्व 'अ' के उच्चारण में होता है।

बाह्य-प्रयत्न- वर्णों के उच्चारण का वह यत्न जो फेफड से कण्ठ तक होता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं मुख से बाह्य होने की श्रपेक्षा से इसे बाह्य कहा जाता है। इसके म्याहर भेद हैं

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, ऋघोष, ऋल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, ऋनुदात्त तथा स्वरिता बाह्य प्रयत्नो के आधार पर वर्णों का विभाजन निम्न तालिका से समझा जा सकता है-

विवार, श्वास, अघोष	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित
'खर्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ण के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स् "खरः विवाराः श्वासाः अघोषश्च"	'हश्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ण के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, अन्तःस्थ एवं ह् "हशः संवारा नादा घोषश्च"	वर्णों के प्रथम, तृतीय, पंचम वर्ण एवं अन्तःस्थ संज्ञक वर्ण	वर्णों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण एवं ऊष्म संज्ञक वर्ण	सभी स्वर वर्ण

" वणसिमूहं शब्दः । पर्ण समूह को शब्द कहते हैं ।

* प्राकृतिक स्वरूप के आधार पर शब्द के प्रकार — 3

[1] संज्ञा [2] सर्वनाम [3] विशेष्य/विशेषण

[1] संज्ञा शब्द - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

[2] सर्वनाम शब्द

* संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। संस्कृत व्याकरण में सर्वनाम शब्द 3 प्रकार के होते हैं।

1. अस्मद् शब्द 2. यूस्मद् शब्द 3. तत् शब्द

[1] अस्मद् शब्द

* जो शब्द स्वयं से सम्बन्धित हो वे अस्मद् शब्द कहलाते हैं।

Ex:- में , हम दोनों, हम सब, मेरा, मुझे इत्यादि ।

[2] यूस्मद् शब्द

* जो शब्द तुम से सम्बन्धित हो वे यूस्मद् शब्द कहलाते हैं।

Ex:- तुम, तुम दोनों, तुम सब, तुम्हारा, तेरा इत्यादि ।

[3] तत् शब्द

* जो शब्द वह ही सम्बन्धित है व तत् शब्द कहलाते हैं।

Ex:- वह, वे दोनों, वे सब, उसका, उन्होने इत्यादि।

NOTE:- भवत [आप] शब्द का भी सर्वनाम शब्दों में ही प्रयोग होता है।

[3] विशेषण शब्द

* विशेषण सूचक शब्दों को विशेषण कहते हैं जिसकी विशेषता बताई जाती है वे शब्द विशेष्य होते हैं। अर्थात् विशेष्य शब्द संज्ञा या सर्वनाम ही होते हैं।

विशेषण का स्वतंत्र रूप से कोई विभक्ति, वचन तथा लिंग नहीं होता है। जो विशेष्य का विभक्ति, वचन, लिंग होता है। वही विशेषण का होता है।

जाति के आधार पर शब्दों के प्रकार - 3

- * भाषा में जाति को लिंग कहा जाता है।
- * लिंग का निर्धारण क्रिया से होता है।
- * संस्कृत भाषा में लिंग के आधार पर शब्द 3 प्रकार के होते हैं।

(i) पुल्लिंग शब्द (ii) स्त्रीलिंग शब्द (iii) नपुंसकलिंग शब्द

(1) पुल्लिंग शब्द - जिन शब्दों में पुरुषत्व के भाव प्रकट होते हैं वे पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं। पुल्लिंग शब्द अकारान्त / स्वरान्त / आहारान्त उकारान्त हो सकते हैं [अ, आ, इ, उ]

अकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "अ" है।

Ex:- रामः, बालकः, पाठः, लेख्यः, कलमः, वेदः, ग्रन्थ, विद्यालयः, हिमालयः, राजकः, भिक्षुकः, खगः, पर्यटकः, सूर्यः, प्रहः, राक्षसः, दुर्जनः, दुष्टः, सिंहः, सर्पः, अश्वः इत्यादि।

आकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "आ" है।

Ex:- राजा, महा, नेता, पिता, कर्ता, ब्रह्म, दाता इत्यादि

इकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "इ" है।

Ex:- हरिः, मुनिः, ऋषिः, गिरिः, प्रीतिः, इत्यादि
वाक्य

उकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "उ" है।

Ex:- भानुः, मनुः, विष्णुः, साधुः, गुरुः, शिशुः, पशुः इत्यादि।

[2] स्त्रीलिंग शब्द

* जिन शब्दों में "स्त्रीत्व" के भाव प्रकट होते हैं वे स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं। स्त्रीलिंग शब्द आकारान्त / इकारान्त / अकारान्त होते हैं।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "आ" हो।

Ex:- रमा, बालिका, लता, माला, शिखा, शाय्या, गङ्गा, यमुना, कक्षा, धारा, वसुधा, धारा, जटा, प्रजा इत्यादि।
 ↳ सर्वेषु बहुवचन में प्रयुक्त

ईकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "ई" हो।

Ex:- नदी, लक्ष्मी, स्त्री, लेखनी, नारी, पृथ्वी इत्यादि।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "ऊ" हो।

Ex:- वधू, यमू [सेना]

[3] नपुंसकलिंग शब्द

* जिन शब्दों में पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों के भाव प्रकट होते हैं वे नपुंसकलिंग शब्द कहलाते हैं। संस्कृत व्याकरण में नपुंसकलिंग शब्दों को क्लीब [किन्नर] नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

* शरीर के अंगवाची शब्द सर्वैषु नपुंसकलिंग होते हैं।

* तरल पदार्थ के सभी शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।

* निर्वर्ण वस्तुएँ जिनका व्यक्तिगत निर्धारण न होकर जातिगत और भावगत बोध होता है वे नपुंसकलिंग शब्द होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग शब्द अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त होते हैं। इनमें विसर्ग का प्रयोग नहीं होता है। तथा अकारान्त शब्दों में "अ" के स्थान पर "अम्" हो जाता है।

Ex:- फलम्, ज्ञानम्, धनम्, वस्त्रम्, पुस्तकम्, पत्रम्, पात्रम्, पुष्पम्, भोजनम्, हस्तम्, पादम्, अक्षि, वारिः [जल], मधु [शब्द] रक्तम्, दुग्धम्, जलम्, पत्रम्

पुंलिङ्ग

अः

आ

इः

उः

स्त्रीलिङ्ग

आ

ई

ऊ

नपुंसकलिङ्ग

अम्

इ

उ

संधि

* एक स्वर वर्ण के अधिकतम प्रयत्न **चार** (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, विवार) होते हैं।

* सन्धि *

* सन्धि शब्द में सम उपसर्ग है। सन्धि शब्द का शाब्दिक अर्थ मोग/मेल/जोड़/संधान होते हैं।

परिभाषा → वर्ण सन्धाना सन्धिः।

“वर्ण मेल को सन्धि कहते हैं।”

सूत्र:- परः सन्निकर्षः संहिता अर्थात् दो अत्यन्त निकटवर्ती वर्णों के मेल में परस्पर सन्धि होती है।

* सन्धि के तीन भेद होते हैं।

(1) स्वर सन्धि (अच सन्धि) (2) व्यंजन सन्धि (इल सन्धि) (3) विसर्ग सन्धि।

(1) **स्वर सन्धि** → दो स्वर वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर सन्धि कहते हैं।

अर्थात् स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = स्वर सन्धि

स्वर सन्धि के मुख्य रूप से **पाँच** प्रकार होते हैं।

(i) मण्ड सन्धि (ii) अपादि सन्धि (iii) गुण सन्धि (iv) वृद्धि सन्धि (v) दीर्घ सन्धि

NOTE:- पररूप, पूर्वरूप और प्रवृत्तिभाव इन तीनों को स्वर सन्धि का प्रकार नहीं माना जाता है।

क्योंकि इन तीनों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। परन्तु ये तीनों स्वर सन्धि में निहित होती हैं।

(i) **मण्ड सन्धि** → द्विकोयणीच

इक : मण्ड अचि

इक + अन्य
↓ असमान
मण्ड

इक	[इ	उ	ऋ	ॠ]	असमान अचि
		↓	↓	↓			
		[प	व	र	ल]

(i) स्त्री + उत्सव

स्त्री + 3
 र् इ + 3
 ↓
 य
 स्त्र्युत्सव

(ii) श्री + अंश

श्रुर् इ + अं
 ↓
 य
 श्रयंश
 श्रयंश

(iii) पारि + अत्र

रुर् इ + अ
 ↓
 य

पारयत्र / पार्यत्र

(iv) परि + आवरणम्

पर्यावरणम्

(v) नदी + उदगम

नद्युदगम / नद्युदगम

* यदि + अपि

रुर् इ + अ
 ↓

यद्यपि

यद्यपि

* प्रति + आहारम्

प्रत्याहारम्

* अनु + अयम्

अन्वयम्

* मधु + अरि ⇒ मध्वरि

* वधु + आगतम् ⇒ वध्वगतम्

* तनु + अङ्गी ⇒ तन्वङ्गी

* मनु + अन्तरम् ⇒ मन्वन्तरम्

* अनु + अत्र ⇒ अन्वत्र

* सु + आगतम् ⇒ स्वागतम्

* भानु + आगम ⇒ भान्वागम

ऋ → र

* मातृ + आज्ञा
 त् + ऋ + आ
 ↓
 र
 मातराज्ञा
 ↓
 मात्राज्ञा

* धातु + अंश *
 त् + ऋ + अंश
 ↓
 र
 धातरंश
 ↓
 धात्रंश

पितृ + आदेश
 त् + ऋ + आ
 ↓
 र
 पितृरादेश
 ↓
 पित्रादेश

* मातृ + अंश
 ↓
 मात्रंश

* मातृ + आज्ञा
 ↓
 मात्राज्ञा

* होतृ + अंश
 ↓
 होत्रंश

ऌ → ल

* ऌ + आकृति ⇒ लाकृति * ऌ + आकार ⇒ लाकार * ऌ + आदेश ⇒ लादेश

* अध्याक्ष
 अ ध् य + अ + क् + ष + अ!
 इ/ई
 अधि + अक्षि

* अध्यादेश
 अध् य + आदेश
 अधि + आक्षि

* प्रत्युपकार
 प्रत् + य् + उपकार
 प्रति + उपकार

* साध्वागमनम्
 साधु + आगमनम्

* नार्यस्ति
 नारयस्ति
 नारी + अस्ति°

* गुर्वाज्ञा
 गुर्ब + आज्ञा

* स्वागतं
 सु + अगत

* धन्वादेश
 धन्व + आदेश

* प्रत्युत्तरम्

* अन्वेकम्
 अन्व + ऐकम्
 अन्वेकम्

* स्त्राज्ञा
 स्त्री + आज्ञा

* पर्याप्त
पर्य + आप्त
पश्य

* व्याप्त
वि + आप्त

* न्याय
न्य + आप्त

* न्यून
न्य + अन्

* अभ्युदय
अभ्य + उदय

* अप्पहितम्
आपि + हितम्

* उपर्युपरि
उपरु + उपरि

* अध्याधि
अधि + अधि

* पित्रेकता
पितृ + एकता

* धात्रातः
धातृ + आत

(ii) अयदि सन्धि →

एचोऽयवायावः
 एच्य [ए ओ ऐ औ] + स्वर
 ↓ ↓ ↓ ↓
 अम् अव आम् आव

* श्रे + अनम्

श्र + ए + अनम्
↓
अम्
श्रमनम्

* रूपे + ए

रूपे + ए
↓
अम्
रूपम्

*

कवि + ए कवये = कण + ए
कृ + अ व + ये
कवे + ऐ

* चै + अनम् ⇒ चमनम्

* नी + अनम् ⇒ नमनम्

* जे + अः ⇒ जयः

* भे + अ = भय

* हो + अनम् = हवनम्

* भो + अनम् = भवनम्

* लो + अनम् = लवनम्

* प्रो + अनम् = प्रवनम्

* पो + अनम् = पवनम्

* वटो + त्रदक्ष =

ट + ओ + त्रद
↓
अव → वटदक्ष